प्रकाशक

साहित्य मन्दिर, वर्धा

२०००

मूल्य आठ आना

मुद्रक

गो. भा. जोशी

भास्कर प्रेस, वर्धा

## दो शब्द

'पाँच अेकांकी', राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा संचालित कोविद परीक्षाकी नयी पाठ्यपुस्तक है। 'अेकांकी' नाटक स्वयं ही साहित्यकी नयी वस्तु है, कोविदके परीक्षार्थियोंके लिये तो और भी नयी है। अतः पाँच अेकांकीके अध्ययनके लिये अुन्हें मार्ग-दर्शनकी और अधिक आवश्यकता है।

अिसी दृष्टिसे हमने प्रस्तुत "पाँच अेकांकी परिचय" पुस्तककी रचना करायी है। अिसके अन्तमें 'अेकांकी तंत्रपर' भी सरल भाषामें प्रकाश डाला गया है।

आशा है, परीक्षार्थियोंको अिससे लाभ पहुँचेगा।

प्रकाशक

# विषय-सूची

पाँच
ओकांकी

प

रि

च

य

# पाँच अकांकी परिचय

## शाही कैदी

'शाही कैदी' सरदार अिन्द्रसिंह चक्रवर्ती, ( सम्पादक 'जीवन प्रती' पंजाबी मासिक पत्रिका, पटियाला ) की रचना है। मूल रचना पंजाबीमें है जिसका हिन्दी अनुवाद श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायनजी ने किया है।

'शाही कैदी' अकांकीकी कथावस्तु अेक सच्ची अैतिहासिक घटना है। सम्पूर्ण रचनामें कहीं भी कल्पना अथवा अतिशयोक्तिसे काम नहीं लिया गया है।

## शाही कैदीकी पृष्ठभूमिका

पंजाब प्रान्तमें सिख सम्प्रदायके अन्तर्गत "कूका" या "नामधारी" अेक सम्प्रदाय है। अिस सम्प्रदायका 'नाम-स्मरण' ही मुख्य अुद्देश्य होनेके कारण अिसका "नामधारी" नाम प्रचलित है।

श्री गुरु गोविन्द सिंहजीके पश्चात अुनकी जगह 'गुरु ग्रंथ साहिब' को गुरु मानते हुअे भी देहधारी गुरुको अपना गुरु मानते हैं। श्री गुरु गोविन्द सिंहके पश्चात ग्यारहवें गुरु गुरु बालिक सिंह गद्दीपर बैठे और फिर वही गद्दी गुरु राम सिंहजीसे सुशोभित हुअी।

गुरु राम सिंहजीका जन्म सम्वत् १९७२ में वसन्त पंचमीके दिन ग्राम 'भैणी साहिब' में हुआ था जो कि जिला लुधियानामें है। बड़े होने पर राम सिंहजी महाराजा रणजीत सिंह की फौज में भरती हुओ थे। पंजाब प्रान्तम अंगेरजोका अधिकार होनेसे पहले श्री राम सिंह नौकरी छोड़कर व्यापार करने लगे थे, परन्तु देशप्रेमकी भावनाने अिन्हें चैन न लेने दिया। अिसलिये देशोद्धार करनेकी दृष्टिसे ही अिन्होंने 'नामधारी' सम्प्रदाय चलाया और थोड़े ही समयमें १२ लाख व्यक्ति अिनके अनुयायी हो गये।

अिस सम्प्रदायके मोटे मोटे नियम ये थे--

१. अंग्रेजी भाषाका सर्वदा त्याग
२. अदालतोंका पूरा बहिष्कार
३. डाकखानेसे सर्वदा सम्बन्ध विच्छेद
४. मांस, मदिरा आदिका परित्याग
५. विदेशी कपड़े, विदेशी औषधका परित्याग
६. स्वयंपाकी बनना
७. हिन्दू संस्कृति और सभ्यताकी अुन्नति करना
८. गौरक्षाके लिये सदा तैयार रहना

अिन राष्ट्रीय अुद्देश्य और नियमोंको देखकर सरकार घबड़ायी और अुसने गुरु राम सिंहको तथा अुनके सम्पूर्ण मुख्य मुख्य व्यक्तियोंको नजरबन्द कर दिया। अितना ही नहीं, सम्वत १९२८ में सरकारने गुरु राम सिंह तथा अुनके २२ सूबेदारोंको गिरफ्तार करके अिलाहाबादके किलेमें बन्द कर दिया। गुरु राम सिंहको ९

महोंने अिलाहाबादमें रखकर रंगून ले जाया गया और वहाँ अुन्हें अुसी बँगलेमें रखा गया जिसमें अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाहकी मृत्यु हुआी थी।

गुरु राम सिंहको अिस प्रकार देश-निकाल देनेके बाद गुरुद्वारा भैणी साहबपर पुलिस चौकी बैठा दी गयी जिसने गुरुद्वाराकी सम्पत्तिकी खूब लूट की। 'नामधारी' सम्प्रदायपर मनमाने अत्याचार किये गये जिन्हें अिस सम्प्रदायने शान्त चित्त होकर सहन किया।

'शाही कैदी' नाटकके अन्तमें शाही कैदीके भाग जाने का प्रसंग है। अिसका रहस्य भी समझ लेना चाहिये।

श्री गुरु राम सिंहजी अकसर यह कहा करते थे कि "जब तक हिन्दुस्तान आजाद न हो जावे, तब तक मेरे शरीरका देहान्त नहीं होता।" मरगोअीमें जब अुनको बहुत कष्ट दिया गया तब वह कहा करते थे कि वह अेक दफा रूस जावेंगे और रूसको साथ लेकर हिन्दुस्तानको आजाद करावेंगे।

अैसा प्रतीत होता है कि अिसी अुद्देश्यको लेकर शाही कैदी अुस किलेसे गायब हो जाता है। कुछ लोगोंका विश्वास है कि गुरु राम सिंह अब भी जीवित हैं।

अिस समय अुनकी गद्दीपर गुरु राम सिंहके भाअी साहबके सुपत्र श्री गुरु प्रताप सिंहजी विराजमान हैं जो स्वतंत्रताके प्रेमी और कांग्रेसके परम स्नेही हैं।

# शाही कैदीकी समीक्षा

'शाही कैदी' अेकांकीमें दो ही पात्र हैं--शाही कैदी और नानू सिंह। अिन दो पात्रोंमें भी शाही कैदी ही प्रमुख है। नानू सिंह पात्रका स्थान अत्यन्त गौण है।

नानू सिंह–कोअी कैदी नहीं था। वह तो केवल शाही कैदी की सेवा करनेके लिये रहता था, रखा गया था। अपनी जन्मभूमि पंजाबको छोड़कर दूर देश वर्मामें जिस स्नेह और लगनसे वह अपने पातशाहकी सेवा करता है वह प्रंशसनीय है। किन्तु घरकी याद, परिवारका वियोग अुसके कलेजेको छलनी किअे देता है। दूसरी तरफ अपने पातशाहको अकेला छोड़कर जानेकाभी अुसका जी नहीं होता। परन्तु अन्तमें वह शाही कैदीसे विदा लेता ही है, या यों कहना चाहिये कि शाही कैदी अुसे विदा करता है।

शाही कैदीका जो शब्द-चित्र अेकांकीके प्रारम्भमें दिया है वह स्वयं ही अच्छा प्रभाव डालने वाला है–" सेवकी तरह चमकता हुआ चेहरा। चाँदीके तारों जैसी सफेद लम्बी दाढ़ी। आँखोंमें मस्ती। नोकदार नाक। लम्बी गरदन। बिना झुकी हुअी सीधी सुडौल कमर। भावपूर्ण किन्तु दृढ़ता लिये हुअे होंठ। मस्तक साफ। लम्बे हाथ। आयु कोअी ५५–५६ के बीच।"

शाही कैदी अेक भावुक, दृढ़निश्चयी, त्यागी, देशभक्त तथा शुद्ध अहिंसावादी है।

मारगोअीकी जेलमें जब वह अकेला बैठता है, अुसे मातृभूमिकी याद आती है। संगतसे प्रथक होनेका दुख भी

अुसके निकट बहुत अधिक है। शाही कैदीके ये वाक्य अुसके भावुक हृदयकी अेक अच्छी झाँकी प्रस्तुत करते हैं-

"वतनकी याद मुझे कब भूली है। वह ठंडी साँस लेती संगत, वह रोती हुई बेटियाँ, वह विलाप करनेवाला पिता, वह अन्दर ही अन्दर जलनेवाला भाअी- कभी भुलाया जा सकता है?........

× × ×

" नींद आयेगी तो सो जाया करूँगा। संगतका विछोड़ा देशका वियोग, माअीकी याद, पुत्रीका विलाप, कभी सोने देगा?"

शाही कैदीकी भावुकता तो तब और स्पष्ट हो जाती है जब वह अपनी चिर संगिनी काली कँबलीको चूमता है, अुसपर प्यार भरा हाथ फेरता है। वह कॅबलीसे कहता है

"आज मैं और तुम दोनों परस्पर प्यार करें। आज तू खुश हो, तेरा शरीक कोअी नहीं रहा"

शाही कैदी भावुक अवश्य है, परन्तु अैसा भावुक नहीं कि अुसकी भावनाअें-अुसके आदर्शको, अुसके दृढ़ निश्चयको बदल सकें। अपने आदर्श, अपने विचारोंकी दृढ़ताके सामने वह हृदय की कोमल भावनाओंकी परवाह नहीं करता।

"नहीं, अभी मैं सब कुछ भुला दूँगा; दिलसे तो शायद नहीं। जब तक मेरा देश आजाद नहीं होता, जब तक धर्म जारी नहीं होता, गअू-गरीबके गलेसे छुरी नहीं अुतरती, मेरा आदर्श पूरा नहीं होता, अुतनी देर तक मैं किसी बातको दिल में नहीं रखूँगा। मैं अपने बलबले, अपने जज़्बे अन्दर ही अन्दर जब्त करूँगा"

रिहाअीका हुक्म आनेपर भी वह अपने दृढ़ निश्चयमें अन्तर नहीं आने देता। "कैदखानेमें पड़ा रहूँगा, जंगलोंकी खाक छानूंगा, दर-दर भटकता फिरूँगा, लेकिन जाऊंगा तब, जब मेरी आशा पूरी हो जायगी—भारतमें अेक भी विदेशी हुकमरां दिखाअी नहीं देगा।"

शाही कैदी अपना अन्तिम फैसला अिन शब्दोंमें देता है

"मैं अिस तरह नहीं जाअूँगा। यह मेरा फैसला सरकारको सुना दो। गुलामीकी जिन्दगीसे कैद अच्छी।"

× × ×

शाही कैदी अेक सच्चा त्यागी देशभक्त है। भारतकी स्वतंत्रता अुसका जीवन अुद्देश्य है। अुसके वाक्य कितने सुन्दर हैं—"मातृभूमिकी स्वतंत्रताके लिये प्रयत्न करना हर अुस आदमीका कर्तव्य है जिसका शरीर मातृभूमिकी मिट्टीसे बना है। जो अपनी जननी जन्मभूमिको गुलाम देखकर आँसू नहीं बहाता, अुसको स्वतंत्र करनेका प्रयत्न नहीं करता, अुसका दुःख देखकर तड़प नहीं अुठता, वह गुनहगार है; अुसे मनुष्य कहलानेका अधिकार नहीं।"

देश सेवाके नामपर अुसने जो त्याग किया है वह सचमुच प्रशंसनीय है। अुसने घर छोड़ा, संगत छोड़ी, बागी बना और न जाने कितने-क्या कष्ट सहे! शाही कैदीके ये शब्द अुसके हृदयकी भावनाओंको अच्छे ढंगसे व्यक्त कर रहे हैं-

"मुझे अभिमान है अपने अिस बागीपनका। मुझे नाज़ है अपनी अिस अुमर-कैद पर। मुझे जब भारत माताकी पराधीनता याद आती है तो अपने सब दुख भूल जाते हैं। गोरोंको देखकर मुझे

कोअी दुख नहीं होता लेकिन अिन मद्रासियों, हिन्दुस्तानियोंको जब गोरोंकी ठोकरें खाते देखता हूँ तो मेरा दिल छलनी छलनी हो जाता है।"

× × ×

शाही कैदी अहिंसाका पुजारी है। वह बहुत कुछ महात्मा गान्धीके विचारोंसे मिलते जुलते विचार रखता है। हिंसासे प्राप्त की गयी स्वतन्त्रतापर अुसका विश्वास नहीं, क्योंकि वह जानता है कि "तलवारसे प्राप्त की हुअी चीज तलवारसे ही खोअी भी जाती है।"

वह जब कहता है कि "मेरा अहिंसात्मक असहयोग और सत्याग्रहका तरीका अैसा ठीक था कि यदि मेरे देशवासी अुसके अनुसार चल सकते तो विदेशी सरकार स्वयं ही शीघ्र विदा हो जाती" तब अैसा प्रतीत होता है मानो महात्मा गान्धीके ही ये बचन हैं।

शाही कैदीका जीवन-आदर्श अुसके अिन शब्दोंमें व्यक्त हुआ है "मेरे दिलमें बदला लेनेका ख्याल ही नहीं आता। मुद्अीका भी भला करना मेरा जीवनादर्श है। मैं खूनका बदला खूनसे नहीं लेना चाहता। मैं तो खूनके बदलेमें प्यार देना चाहता हूँ। मैं नफरतको नफरत करता हूँ, बैरसे मुझे बड़ा बैर है। ....मैं दुश्मनको भी प्यारकी तलवारसे बिस्मिल करना चाहता हूँ।"

अूपर लिखे अपने अिन्हीं गुणोंके कारण शाही कैदी हमारी श्रद्धाका अधिकारी है।

# शाही कैदीके शब्दार्थ

## पहली झाँकी

अपरान्ह –दोपहरके पश्चात । चहारदीवारी–परकोट । गडुवा–टोंटीदार लोटा, झारी । शाही कैदी–राजबन्दी । पालथी–पैरपर पैर रखकर आसन लगाकर बैठना । पातशाह–बादशाह । फीका–तेजहीन । सरूर–हलका नशा । नूर–कान्ति । अरदास–संसारके कल्याणकी प्रार्थना । अदबके साथ–आदरके साथ । संगत–सिखोंकी धार्मिक सभा । अकाल पुरुष–ओीश्वर । अकाल–जिसका कोओी काल न हो, अर्थात ओीश्वर । वतन–जन्मभूमि । गद्दारी–देशद्रोह । जलावतन–देशनिकाला, निर्वासन । गुनहगार–दोषी । सीना तानना–हिम्मतके साथ खड़े रहना । फखर–गर्व । वहशी–जंगली । खोखली–शक्तिहीन । पातालमें चली जाती–बहुत दूर हो जाती । मुद्दओी–दावा करने वाला । नफरत–घृणा । ओेलची–दूत, बाहरी–विदेशी । कदर करना–मूल्य समझना । बिस्मल–घायल । चुन्दी वाले–चुन्दी ओेक गाँवका नाम है । छलनी किओे डालना–अति दुख देना । सदमा–दुख । बर्दाश्त–सहन । नज़ारा–दृश्य । वलवले–आवेग, जोश । जज़बे–प्रबल ओिच्छा । ज़ब्त–रोकना । कीनख़ाब–बहुमूल्य कपड़ा । अतलस–ओेक प्रकारका रेशमी कपड़ा । विछोडा–वियोग । दरख्वास्त–प्रार्थनापत्र । जुर्म–अपराध । कुरबान–न्योछावर । बेसिदक–आजतक आत्मसमर्पण किये रहनेवालेको 'अविश्वासी' घोषित करना ।

मुस्तैद–लगे रहें । होगा तो आटा........होकर रहेगा–होगा तो कुछ विशेष, अगर अुतना नहीं तो कुछ न कुछ तो होकर रहेगा ।

## दूसरी झाँकी

दुधधुली—बिलकुल सफेद । छै—गीत । सरसब्ज हरीभरी । बदहोशी—तेज नशेमें । अनापशनाप—अंटशंट । आत्मगत—स्वगत, अपने आपसे कहते हैं । अरदली—चपरासी । अुफ—हाय ! कोअी करे कोअी भरे—कोअी अपराध करे और कोअी दंड पाये, यह ठीक नहीं । अिन्साफ—न्याय । रूहों—(आत्माओं) शकलों । हसरत भरी नजर—अिच्छा भरी दृष्टि । रश्क—अीर्षा । बाज नहीं आते—रुकते नहीं । गुमरी वाले गुमरी अेक गाँवका नाम है । नजरबन्द—नजरकैद । शक—सन्देह । बाल बाँका—कुछ भी न बिगाड़ना । अमन—शान्ति । सति सिरी अकाल—सिख लोग जब प्रणाम करते हैं तो "सति सिरी अकाल" कहा करते हैं ( सत्य श्री अकाल ) । मुबारकबाद—बधाअी । रंग दिखलायेगा—प्रभाव पैदा करेगा । रिहा—मुक्त । मखौल मजाक । हो-हल्ला—कोअी गड़बड़ी । हुक्मरां—शासक । बागी—विद्रोही । आगे—अिससे पहले । फैसला—निर्णय । आपा-धापी—शोरगुल, दौड़धूप ।

## शाही कैदीपर प्रश्न

१— शाही कैदीकी मनोभावनाओं, विचारोंका परिचय दीजिये ।

२— "शाही कैदी मातृभूमिका अेक सच्चा सेवक, अहिंसाका अनुयायी और अेक भावुक व्यक्ति है ।" स्पष्ट कीजिये ।

३— 'शाही-कैदी घटना-प्रधान नहीं चरित्र-प्रधान अेकांकी है ।' स्पष्ट कीजिये ।

४— सिखों और अंग्रेजोंके सम्बन्धमें शाही कैदीके क्या विचार हैं ?

# चिनगारीकी समीक्षा

'पूंजीवाद' समाजका अभिशाप है। मजदूर-किसानोंकी समस्या आजकी सबसे बड़ी समस्या है। समाजके दो स्तरोंमे—धनिकवर्ग और मजदूरवर्गमें अितनी अधिक आर्थिक विषमता है कि वह अब सहन नहीं की जा सकती। 'चिनगारी' अिसी विषमताको दूर करनेके लिये अेक विद्रोह है।

चिनगारी अेकांकीमें धनिकवर्ग और दीन मजदूरवर्गके जीवनकी झाँकी दिखाअी गयी है। धनिकवर्गका अत्याचार वर्तमान समयके युवक-युवतियोंके सहन नहीं, फिर चाहे वे युवक और युवती धनिकवर्गके ही क्यों न हों। विषमताके खिलाफ विद्रोह करना आजका युग-धर्म है। 'मीरा और अंजनी' अिसी युगधर्मके पालनेमें कटिबद्ध हैं। अेक ओर युगका युवक दल समाजमें व्याप्त विषमता, अत्याचारको दूर करना चाहता है तो दूसरी ओर समाजका वृद्ध अंग अपनी पूर्व परम्पराको अक्षुण्ण बनाये रखनेका प्रयत्न करता है। रायबहादुर, बापूजी, नरसाप्पा आदिका 'चिनगारी' में यही काम है।

'चिनगारी' के अन्तमें 'स्त्री स्वातंत्र्य' की ओर भी संकेत किया गया है। मीराके ये शब्द कितने स्पष्ट हैं—"औरतों और बच्चोंको गुलाम समझनेका वक्त चला गया। हुकूमतके दिन बीत गये। मीराके कथनानुसार पत्नीका भी अुतना ही अधिकार है जितना पतिका; पुत्रीका भी अुतना ही अधिकार है जितना पुत्रका।

चिनगारी अेकांकीमें अनेक पात्र है। मीरा और अंजनी दो लड़कियाँ हैं जो आजके समाजकी कुरीतियोंके विरुद्ध विद्रोहका झंडा अुठाती है।

पहले दृश्यमे वकील साहबका क्लर्क 'बापूजी' अपने मालिकोंसे पद-पदपर डरने वाले नौकरोंका नमूना पेश करता है। अुसकी घबराहट न केवल मीरा और अंजनीके लिये, वरन पाठकोंके लिये भी मनोरंजनकी सामग्री अुपस्थित करती है।

दूसरे दृश्यमें अेकांकीकारने रायबहादुर, नरसाप्पा और रायसाहब खेखलेके वार्तालाप द्वारा अुन विचारों, तर्कों और भावनाओंका परिचय दिया है जो अुच्च मध्यवर्ग और पूंजीपति धनीवर्गके दिमागोंमे चक्कर लगाया करते हैं।

मजदूरोंकी वास्तविक परिस्थितिसे परिचित मीरा, और साथ ही अिन नफाखोर पूंजीपतियोंकी सारी चालबाजियों और तिकड़मोंको समझने वाली मीरा, जिस निर्भयता और स्पष्टवादिताके साथ अपने पिता, नरसाप्पा और रायबहादुर जैसे तथाकथित बड़े लोगोंके सामने अपने ही नहीं, अपने युगके भी स्पष्ट विचार रखती है वह वर्तमान युगकी विचार धारा है जिसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। किसान और मजदूरोंके रक्तका शोषण अिन जमींदारों और पूंजीपतियों द्वारा अब बहुत दिनों तक नहीं होता रह सकता। अिनका विरोध करनेके लिये आजका युवक दल तैयार है। मीरा और अंजनी अपने पिताकी आज्ञाका अुल्लंघन करती है।

अेकांकीके अन्तमें स्त्री स्वातंत्र्यकी ओर भी संकेत है। जिसका अुल्लेख अूपर किया जा चुका है।

# चिनगारीका शब्दार्थ

सौन्दर्य........पदार्पण कर रही–युवती होनेके कारण अत्यन्त सुन्दर है। अिच्छित–चाही हुअी। खिसियानी–खीझी हुअी, परेशान। सयानी–होशियार। गवाह–साक्षी। हर! हर! –शिव! शिव! कबूल–स्वीकार। खफा–नाराज़। शेव करना–दाढ़ी बनाना। नसीब–भाग्य। झक मारकर–परेशान होकर। सौगंध–शपथ। गजब ढा देंगे–आफत पैदा कर देंगे। बगलमें...ढिंढोरा–सामने चीज पड़ी रहे और अुसे तमाम जगह खोजा जाय। थैन्क्यू–धन्यवाद। लीडरी–नेतागिरी। कागज़ात–दफ्तर सम्बन्धी कागज़। मुद्दाले–जिसपर दावा किया जाय। हस्ती–अस्तित्व, मूल्य। अिन्तज़ार–प्रतीक्षा। स्टाक–भंडार। बेअिज्जती–अपमान। आमद–आमदनी। चारो अस्त्र–साम, दाम, दण्ड, भेद। आमादा–तैयार। जचकी–प्रसव काल। धर्मादा–धर्मके लिये प्रति रुपया कटने वाली रकम। खातिर–लिये। सूत्रधार–संचालक। चूं तक न करना–ज़रा भी न बोलना। पिशाचवत–भूतकी तरह। फायर ब्रिगेडको फोन करो–आग बुझाने वाली मशीनके लिये सन्देश भेजो। आबरू–अिज्जत, शोभा। फर्ज–कर्तव्य। सवा सोलह आना–बिलकुल ठीक। बवंडर–तूफ़ान। प्रेसिडेंट–अध्यक्ष। दानशूर–दानवीर। लोकशाही–प्रजातंत्र युगमें। दाल नहीं गलेगी–बात नहीं चलेगी। पिट्ठू–पीछे पीछे चलने वाले। आँखमें धूल झोंकना–धोखा देना। पीसकर, दलकर–अत्यन्त कष्ट देकर। छाट–कमी। छींटेकशी–व्यंगके साथ अपराध लगाना। आवारा–बन्धनहीन। नृशंसता–क्रूरता। पाशविकता–पशुत्व। अन्त-

बाह्य—भीतर और बाहर। कतअी—बिलकुल। चमड़ेकी झोपड़ी—शरीर। फिदा—बलिहार। सुध ली—परवाह की। जी तोड़—कठिन परिश्रम। मुआवजा—हानि के बदलेमें दी जाने वाली रकम। बकवास—व्यर्थकी बातें। बेजोड़—अनोखी। दलील—तर्क। विभूति—पुण्यात्मा। आड़—ओट। फिलासफी—सिद्धान्त, दर्शन। मिसाल—अुदाहरण। बेहया—बेशर्म। तहस-नहस—नष्ट भ्रष्ट। कमाल करना—अनोखा कार्य करना। प्रतिकार—रुकावट। शरारत—दुष्टता। यकीनन—विश्वासके साथ। कारनामें—बुरे काम। वाक़या—घटना। ख्वाब—स्वप्न।

## चिनगारीपर प्रश्न

१ अिस अेकांकीका नाम 'चिनगारी' कहाँ तक अुचित है, लिखिये।

२ "पूंजीवाद' समाजका अभिशाप है। चिनगारी नाटकमें अुसीके प्रति विद्रोह दिखाया गया है" स्पष्ट कीजिये।

३ पूंजीवादियोंके वैभव विलास और मजदूरोंकी यातनाओंकी तुलना कीजिये।

४ 'चिनगारी' नाटकमें 'स्त्री स्वातंत्र्य' का भी संकेत है। स्पष्ट कीजिये।

५ 'चिनगारी' में हास्यको भी स्थान दिया गया है। अुदाहरण देकर अिस कथनका समर्थन कीजिये।

## समुद्रगुप्त पराक्रमांककी समीक्षा

श्री रामकुमार वर्मा हिन्दीके सफल अेकांकीकार हैं। समुद्रगुप्त पराक्रमांक अुनका अैतिहासिक अेकांकी है। भारतीय अितिहासमें चन्द्रगुप्त मौर्यसे प्रारम्भ होनेवाला गुप्तकाल अपने वैभव और अुन्नतिके लिये प्रसिद्ध है। समुद्रगुप्त अेक यशस्वी राजा था। वह सचमुच पराक्रमी था। 'पराक्रमांक' अितिहास-सम्मत समुद्रगुप्तकी अुपाधि है जो अुसकी मुद्राओंपर मिलती है।

सिंहलके सामन्तकी ओरसे अेकभेंट समुद्रगुप्तके पास आयी थी, अितिहास अिसका समर्थन करता है। और मठ-निर्माण की बात भी सत्य है।

अेकांकीमें केवल मणियोंकी चोरीकी बात कल्पनापर आधारित है। जहाँतक समुद्रगुप्तकी सहिष्णुताका प्रश्न है, अितिहास अुसका भी समर्थन करता है। समुद्रगुप्तका संगीत-प्रेम और वीणा-वादन-निपुणता भी अितिहास-सत्य तो है ही, जगत-प्रसिद्ध भी है।

अिस नाटकमें भारतीय संस्कृतिका अेक अुज्ज्वल चित्र अुपस्थित किया गया है। अेकांकीके मुख्य भारतीय पात्र समुद्रगुप्त, मणिभद्र, रत्नप्रभा--सभी-के-सभी अुच्च कोटिके व्यक्ति प्रतीत होते हैं। अुनका कोअी कार्य, अुनका कोअी वाक्य अैसा नहीं है जिसपर अुँगली अुठाअी जा सके। समुद्रगुप्त तो अुनमें श्रेष्ठ है ही।

'धवलकीर्ति' के द्वारा जो कार्य हुआ है अुसे अुज्ज्वल नहीं कहा जा सकता। रत्नके लोभमें पड़कर और फिर अुनके द्वारा

राजनर्तकीके प्रेमकी प्राप्तिका प्रयत्न, अुन्हें अत्यन्त साधारण व्यक्तिकी कोटिमें लाकर खड़ा कर देता है। हाँ, पाप प्रकट होनेपर जिन शब्दों द्वारा अुसने अपना पश्चात्ताप व्यक्त किया है, साथ ही आत्मघातके द्वारा जो प्रायश्चित्त किया है, वह अुसे अवश्य अूँचा अुठाता है। सच्ची आत्मग्लानि सब पापोंको राख बना देती है। धवलकीर्ति भी समुद्रगुप्तके शब्दोंमें "स्वयं दंडित होनेसे धवलकीर्ति अपने अपराधोंसे मुक्त हुआ है और धवलकीर्तिने अपना नाम धवल ही रहने दिया है।"

अेकांकीकी समाप्तिपर हम समुद्रगुप्तके बुद्धिकौशल, न्यायप्रियता और सहिष्णुताकी प्रशंसा करनेके लिये विवश होते हैं। मणिभद्र हमारी बधाओीका पात्र बनता है और धवलकीर्ति दयाका। रत्नप्रभाके बाह्य सौंदर्यके साथ-साथ अुसका आन्तरिक सौन्दर्य भी हमें कम मुग्ध नहीं करता।

'समुद्रगुप्त पराक्रमांक' अेक अुच्च कोटिका अेकांकी है। अपने छोटे कलेवरमें वह अितनी अधिक जानकारी छिपाये है, वर्णन अितना सजीव है कि पाठक थोड़ी देरके लिये समुद्रगुप्तके दरबारका अेक दर्शक बन जाता है और घटनाओंका चलचित्र अुसके सामने फिरने लगता है।

अेकांकीकी भाषा साहित्यिक हिन्दी है। वाक्योंमें कविताका आनन्द मिलता है। भाषा कहीं भी ढीली-ढाली नहीं है। सम्पूर्ण अेकांकीमें अेक भी भरतीका वाक्य नहीं और न किसी वाक्यमें कोअी शब्द ही। सरल भाषाके प्रयोगके अभावका दोष लेखकपर नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि जिस काल-विशेषको यह अेकांकी प्रस्तुत करता है अुस समयके लिये काव्यमय संस्कृतप्रचुर भाषा ही विशेष अुपयुक्त हो सकती है।

## समुद्रगुप्त पराक्रमांकके शब्दार्थ

पराक्रमांक—अितिहास-सम्मत समुद्रगुप्तकी अुपाधि है जो अुसकी मुद्राओंपर मिलती है। अधिकरण—अधिकारी। महाबलाध्यक्ष—सेनापति। शिल्पी—कारीगर। वीणा वादिनी—वीणा धारण करने वाली। भांडागार—भंडार घर। कक्ष—कमरा। स्फटिक—संगमरमर पत्थर। परिवेषण—घेरा। परिधान—वस्त्र। केशअुन्मुक्त—केश खुले हुअे। कटिबन्ध—कमर। पोषित—रक्षित। मृत्यु पीड़ाका दर्शन—मृत्युकी पीड़ा देनेवाला आघात। अपराध..........हो सकती है—अपराध बहुत समय तक छिपाया नहीं जा सकता। वह कृपाण..............जा सकती—भंडार घरकी रक्षा कृपाणधारी सैनिकों द्वारा ही होती है और होनी आवश्यक है। परितोष—सन्तोष। राजमहिषी—रानी। प्रतिमा—मूर्ति। स्वर्णपात्रों—सोनेके बरतनों। अंगुष्ठ—पैरके अँगूठे। विजड़ित—जड़े जावे। आवेगसे—तेजीसे। प्रचारित—प्रकाशित। अुपहास—मजाक। अपेक्षित—आवश्यक। निर्मित हुअी—बनी। अंतरंग—भीतरी। प्रकोष्ठ—कमरे। भिक्षुओं—साधुओं। निर्देश—आज्ञा। सात्विक—पवित्र। आवास स्थान—रहनेका स्थान। महामायाका स्वप्न—गौतम बुद्धके जन्मके पहले माँ, महामायाने अेक दिव्य स्वप्न देखा था अुसी से यहाँ मतलब है। महानिष्क्रमण—संसारको छोड़कर गौतमका तपस्याके लिये जाना। बुद्धत्व प्राप्ति—पूर्ण ज्ञान प्राप्त करनेकी घटना का चित्र। प्रव्रज्या—सन्यास व्रत लेना। चीवर—अेक लम्बा चौड़ा वस्त्र जो बौद्ध सन्यासी ओढ़े रहते हैं। कलाविद—कलाकार। अुत्कृष्ट—अूँचे।

मौलिकता—नवीनता। पर्यटन—भ्रमण। प्रस्तरमें प्राण फूँकने वाले—पत्थरोंमें जान डालने वाले। दंडित नहीं हो सकते—सजा नहीं दी जा सकती। विषम—असमान। निरीहता—भोलापन। तृष्णा—लोभ। प्रतिबन्ध—बन्धन। निर्मलता—पवित्रता।

तथागत—भगवान बुद्ध। आर्यसत्य अर्थात श्रेष्ठ सत्य बौद्ध धर्मके अनुसार चार आर्य सत्य हैं— १ दुःख आर्य सत्य २ दुःख समुदय आर्य सत्य ३ दुःख निरोध आर्य सत्य और ४—दुःख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग आर्य सत्य।

यतिगति—प्रत्येक जीवन कार्यमें। संचरित—व्याप्त। जीवनकी अनुभूतियाँ प्राप्त करता था—जीवनके नये नये अनुभव प्राप्त करता था। अभिरुचि—विशेष रुचि। भाव भंगिमाओं—भावपूर्ण मुद्राओं। अुपेक्षणीय—न ध्यान देने योग्य। अुद्यत—तैयार। केदारा—अेक रागका नाम। स्वरोंका सन्धान—स्वरोंको यथाक्रम करना। अव्यवस्थित—अशान्त। वादन—बजाना। न्यायाचरण—न्याय कार्यमें। तुम्बुरु—अति प्राचीन कालका अेक प्रसिद्ध संगीतज्ञ। मुद्राओं—सिक्कोंपर। मुखरित—बजेंगे। कालुष्य—पाप। मूर्छनायें—तीव्र भावनाअें।

जैसे..........चाहता है—केदारा करुण रसकी रागिनी है और अुसका प्रभाव बड़ा गहरा होता है। सारा संसार-करुण रससे प्लावित दिखाअी देता है।

तारिकाअें.......करने लगती हैं—आकाशके तारे भी अेकत्रित होकर करुणासे द्रवीभूत होते प्रतीत होते है।

कलिकाअें........बन जाती ह—केदारा रागिनीमें शान्ति और विकास दोनों ही हैं। अुसके प्रभावसे कली फूल बन जाती है। तन्मय—लीन। सौन्दर्यकी........आकृति है—सौन्दर्यकी यह साक्षात प्रतिमा है। अंगराग—सौन्दर्य प्रसाधन। पुष्पांकन—किसी फूलकी

आकृतिका चित्र। चिबुक–ठोड़ी। दोलायमाना किंकिणी–हिलती झूलती हुअी करधनी। पद विन्यास–पद संचालनको और अधिक मधुर बना रही है। सम–संगीतका अेक मुख्य विराम स्थल। कलुषित–दूषित। अनुग्रहीत–कृतज्ञ। लांछित–कलंकित। मर्यादाके संकटमें–जहाँ मर्यादाओंका बन्धन हो। वहाँ दण्ड तुम्हें पाकर सुखी होगा–तुम अितने बड़े दोषी हो कि तुमको कड़ा दण्ड मिले यह प्रसन्नताका विषय होगा। परिताप–पश्चात्ताप। मंजूषा–पिटारी, सन्दूकची। पुरस्कृत होनेकी सार्थकता है– आप मुझपर प्रसन्न हैं यही मेरा पुरस्कार है। मंगलवाद्य–शुभ संगीत।

## समुद्रगुप्त पराक्रमांकपर प्रश्न

१. "अिस अेकांकीमें अेक अुलझन पेश की गयी है और अुसके सुलझते ही अेकांकी समाप्त होता है।" अिसे स्पष्ट कीजिये।

२. समुद्रगुप्त, धवलकीर्ति और रत्नप्रभाकी जो जीवन झाँकी अिस नाटकमें हमें मिलती है वह भव्य है, मनोरम है।" अिस कथनका समर्थन कीजिये।

३. समुद्रगुप्तने किन साधनों द्वारा रत्नोंकी चोरीका पता चलाया?

४. मणिभद्रकी जीवन झाँकी अंकित कीजिये।

५. अेकांकीके आधारपर संगीतकी महत्ता व्यक्त कीजिये।

६. "अेकांकीकी भाषा अत्यन्त संस्कृत–प्रचुर है। अिसे चलती हिन्दी नहीं कहा जा सकता।" अपना मत लिखिये।

## 'जीवन' की समीक्षा

प्रो. आनन्द, जीवन, कला, धनीराम, विद्यापति तथा डा. विश्वास अिस 'जीवन' अेकांकीके पात्र हैं और कथानक बहुत छोटा है। अेकांकीकी विशेषता अिस बातमें है कि कथानककी रक्षा करते हुअे पात्रोंका वार्तालाप जहाँ विशेष सफल रहा है, वहीं वह अुन अमूर्त भावनाओंके पक्ष-विपक्षमें कहनेमें भी सफल हुआ है जिसके लिये अिस अेकांकीकी रचना हुअी है। प्रो० आनन्द, आनन्द और संगीतका; जीवन, जीवनका; कला, कलाका; धनीराम, धनका; विद्यापति, कविताका; और डॉ० विश्वास, विश्वासका प्रतिनिधित्व करते हैं। अिस दृष्टिसे अेकांकी पढ़नेपर विशेष रूपसे समझमें आता है।

संगीत श्रेष्ठ है या कविता, यह विवादका प्रश्न बनता है। विद्यापति कविताको श्रेष्ठ मानता है। धनीराम संगीतको कवितासे श्रेष्ठ अवश्य मानता है, पर धनका प्रतिनिधित्व करता हुआ वह संगीतको दिल बहलावकी वस्तु समझता है।

प्रो. आनन्दकी दृष्टिसे विद्या और धन दोनों ही कलाके लिये अनुपयुक्त हैं। तब वह सोचने लगता है कि क्या कलाकी सार्थकता 'कलाके लिये' ही में है! अुसे संतोष नहीं होता। आगे चलकर

वह 'कला' की सार्थकता 'जीवन' में पाता है। प्रो. आनन्दके ये शब्द अिसीके द्योतक हैं :-

"जीवन और कला, कला और जीवन ! कितना सुन्दर है यह मेल ! कला जीवनके बिना कहाँ रह सकती है ? और कब रही है ? जीवनको भी जीवनकी रक्षाके लिये कला चाहिये ही। जिस जीवनमें कला नहीं, वह पशु-जीवन है, कूडेका ढेर। मैं जीवनको कलाके साथ मिलाअूँगा।"

'जीवन' और 'कला' मिलते हैं। अुसके मिलनेपर आनन्द अपनी चरम सीमापर पहुँचता है। अेकांकीकारका यही सन्देश है। जीवन और कलाके सम्मिश्रणमें ही आनन्द है।

'जीवन' अेकांकी अपने किसी पात्रकी किसी विशेषताको अथवा किसी घटना-विशेषको व्यक्त नहीं करता। सम्पूर्ण अेकांकी अेक मत-विशेषको प्रगट करनेके लिये लिखा गया है। अिस अेकांकी नाटककी सफलता अिसी बातमें है कि अमूर्त भावोंको पात्रोंके रूपमें, घटनाके आधारपर, प्रस्तुत किया गया है। यह कार्य सरल नहीं है। अैसे नाटकोंमें प्रायः प्रत्येक वाक्यको पात्रों और घटनाओंकी दृष्टिसे तो स्वाभाविक बनाना ही पड़ता है, साथ ही अुन विचारों और भावोंके प्राणकी भी रक्षा करनी पड़ती है जिनके लिये अैसे नाटक लिखे जाते हैं। 'जीवन' नाटकमें यह सफलतासे हुआ है।

## 'जीवन' के शब्दार्थ

कालीन—गलीचा। म्यूजिक कान्फ्रेंस—संगीत समारोह। प्रोग्राम—कार्यक्रम। तोड—लयके साथ नृत्यकी गति। स्टेपिंग—पैरोंकी थिरकन। सुघड़—सुन्दर। निखर रही—विकासित हो रही है। सिखतड़—सीखना प्रारम्भ करनेवाली। अदालत—कचहरी।

बहकी-बहकी—बिलकुल अिधर अुधरकी। मेघ—बादल। मयूर—मोर पक्षी। हलाहल—विष। मरुस्थल—मरुभूमि।

ट्रे—बड़ी तस्तरी। लुढ़क जाते—बैठे बैठे ही अेक तरफ गिर पड़ते हैं। नब्ज—नाड़ी। बड़बड़ाने—अंटशंट बकने। मालकोस—अेक रागका नाम। गत—अेक लय-विशेष। त्रस्त—घबराये हुअे। तहलका—हलचल, धूम।

बाह्य आडम्बर—बाहरी तड़क-भड़क। वंडरफुल—अति आश्चर्य। हाअू अेमेजिंग—कितना आश्चर्यजनक। टेम्परेचर—तापक्रम। नारमल—सामान्य। आपकी तारीफ—आपका परिचय? दून—हरी दूर्वा घास। कसक—पीड़ा। कमाल करना—अनोखा कार्य करना। कॉंग्रेच्यूलेशन्स—बधाअियाँ। हार्ट फेल—हृदयकी गति बन्द हो गयी।

# 'जीवन' पर प्रश्न

१. नाटकके आधारपर कविता और संगीतकी तुलना कीजिये। किसे आप श्रेष्ठ समझते हैं और क्यों?

२. "विद्यासे कलाका मेल नहीं, धन उसे भाता नहीं, फिर यही ठीक है—कला कलाके लिये—स्वयंके लिये........" इसका अर्थ स्पष्ट कीजिये।

३. "जीवन और कला, कला और जीवन! कितना सुन्दर यह है मेल!" इसका अर्थ स्पष्ट कीजिये।

४. "अमूर्त भावोंको पात्रोंका रूप देनेमें लेखकने बड़ी कुशलता दिखायी है।" समर्थन कीजिये।

# 'माँ-बाप' की समीक्षा

हिन्दू मुसलिम समस्या भारतकी गहनतम समस्या है। अिसे हल करनेके विभिन्न अुपाय बताये जा चुके हैं, बताये जा रहे हैं; किन्तु अभीतक विशेष सफलता नहीं मिली है। अिस समस्याको किस साधनद्वारा सुलझाया जाय, अथवा कैसे यह समस्या सुलझ सकती है, अिसीको व्यक्त करनेके लिये यह अेकांकी लिखा गया है।

आदर्श अूँचा अवश्य है और अिसीलिये कठिन भी है। परन्तु अिस साधनको छोड़कर और कोअी मार्ग चिरशान्तिका दिखायी नहीं देता। जबतक हम राष्ट्रीय भावनासे प्रेरित होकर "हम पहले मानव हैं, हिन्दुस्तानी हैं, पीछे और कुछ"—नहीं सोचेंगे, हमारा अुद्धार होना कठिन है।

'माँ-बाप' अेकांकीका 'अशोक' मानवताका पुजारी है। कौन हिन्दू, कौन मुसलमान, कौन सिख—अिसका प्रश्न ही नहीं अुठता। भेद-भाव छोडनेका ही आदर्श यहाँ अुपस्थित किया गया है।

दामोदरस्वरूपके ये वाक्य सुन्दर हैं—"अशोककी बहन होकर रोती हो? तुझे अशोक चाहिये न! देख कितने अशोक हैं। यदु, अनवर, शमशेर, रामदास आदि आदि सब तेरे अशोक हैं। यह अखंड भारत अनेक अशोकोंसे भरा है।"

दामोदरस्वरूप अेक योग्य पिता हैं, कलावती योग्य माता। अनिता भी महाशया है। अशोक चरित्रनायक है और अुसका चरित्र अति अुज्ज्वल है।

कलावती अेक ममताभरी माँ है। अपने पुत्र अशोककी अुन्नतिकी, अुसकी मंगल कामनाकी पवित्र भावना अुसके हृदयमें हिलोरें लिया करती है। कोअी माँ अपनी सन्तानको अपनेसे अलग नहीं रखना चाहती। अधिक ममता होनेके कारण पुत्रकी वियोगावस्थामें माँके हृदयमें अनेक प्रकारकी अशुभ शंकाअें पैदा हुआ करती हैं। अिसीकी ओर संकेत करते हुअे कलावतीने अेक स्थानपर कहा है—"माँका दिल बड़ा पापी होता है।"

यद्यपि वह भी माँ है, अपने पुत्र अशोकके लिये मन-ही-मन अधीर है, परन्तु साथ ही वह अितनी गम्भीर भी है कि जगवन्तीको धैर्य दिलाती है, साहस रखनेके लिये कहती है।

कलावती वीर-माता भी है। पुत्रका लड़ाअीमें जाना कोअी सामान्य माँ पसन्द नहीं करती। जब कलावती सुनती है कि अुसके अशोकने सैकड़ोंकी जानें बचायी हैं, अशोकके संकटमें पड़नेपर भी अपना सन्तोष प्रकट करती है।

अशोककी मृत्युसे वह मर्माहत हो जाती है, किन्तु जब युवक दल अुससे कहता है—"तुम हम सबकी माँ हो" तो यह सुनकर और प्रत्येक युवकमें अपने अशोकको देखकर कलावतीकी आँखें चमक अुठती हैं। वह आदर्श माँका धर्म पूरा निभाती है।

दामोदरस्वरूप—अपने पुत्र अशोककी अुन्नति देखने और अुसका यश सुननेके लिये अुत्सुक ही नहीं, अधीर भी है। अखबारोंमें अुसका छपा हुआ नाम देखकर अुसकी प्रसन्नताकी सीमा नहीं रहती। वह अपने प्रशंसित पुत्रके साथ पिताकी अर्थात् अपनी प्रशंसा जुड़ी हुअी देखता है। अुसके ये शब्द अिसी बातके द्योतक हैं:

"कुछ भी हो, दुनिया अिस बातको जानेगी कि दामोदरस्वरूपने आप मुसीबतें अुठायीं, परन्तु लड़केको शिक्षा देनेमें कसर न रखी।"

सम्पूर्ण अेकांकीमें दामोदरस्वरूपको हम अिसी रूपमें पाते हैं। वह यदुनाथसे अुत्सुकताके साथ पूछता है

"यदु बेटा, क्या सचमुच अशोकका नाम लोग श्रद्धासे लेते हैं!"

डॉक्टर साहबसे वह कहता है—"डॉक्टर साहब, मैं गरीब हूँ, पर अशोकके लिये जो कहोगे वही करूँगा। दुनिया यह नहीं कह सकेगी कि दामोदर बेटेके लिये कुछ करनेमें झिझका था।"

अेकांकीके अन्तमें हम अुसे वीर बापके रूपमें भी देखते हैं। पुत्रका शव सामने है। दामोदरस्वरूप कलावतीसे कहता है—"क्या भारती हो कलावती! रोती हो! अशोकने कहा था—रोना मत।"

"लेकिन मैं बाप हूँ। अशोक वीर पुत्र था। मैं वीर पुत्रका वीर बाप बनूँगा। मुझे अशोकपर गर्व है। मैं दुनियाको यह कहनेका मौका न दूँगा कि अशोक जैसी महान और दिव्य आत्माका पिता दामोदरस्वरूप रोया था। मैं हँसूँगा।"

हम देखते हैं कि दामोदरस्वरूपको अिस बातकी बड़ी चिन्ता है कि दुनिया अुसके बारेमें क्या कहती है।

# माँ बापके शब्दार्थ

## पहला दृश्य

कस्बा—नगर। अनुपात—तुलना। बेड—पलंग। साअिड टेबुल—छोटी मेज। मोढ़े—अेक प्रकारके स्टूल। टाअिमपीस—घड़ी। बिछावन—बिस्तरे।

माने हुअे—प्रसिद्ध। हड़बड़ा—घबड़ाकर। ढाढ़स—धैर्य। निहत्थे—बिना हथियारके। स्त्री बड़ी कच्ची है—कच्चे हृदयकी है। कुकड़ियाँ—सूतके लच्छे। अटेरन—लकड़ीकी अेक तख्ती। अटेरना—अटेरनपर सूत लपेटना।

## दूसरा दृश्य

दालान—लम्बा कमरा। अुद्विग्न—अत्यन्त चिन्तित। बेगुनाह—निर्दोष। सरगना—सेनापति, लीडर। हठात् स्वस्थ होकर—बलपूर्वक अपनेको सम्हालकर।

## तीसरा दृश्य

राक्षस जाग पड़ता है—मनुष्य राक्षस बन जाता है। भलेके लिये—अच्छेके लिये। क्षुद्र सीमा—संकुचित घेरा। सोहता—शोभा देता है। अुद्विग्नता-व्याकुलता। कुंठित-अुदास द्रवित रोनेकी मुद्रामें। मजहबी दीवानों—धर्मान्धोंने। हतप्रभ—तेजहीन। कुहनी—हाथ और बाँहके जोड़की हड्डी।

# माँ बापपर प्रश्न

प्रश्न १. "दामोदरस्वरूप और अुसका पूरा परिवार सेवाव्रतका व्रती प्रतीत होता है।" सिद्ध कीजिये।

२. "दामोदरस्वरूप अपने योग्य वीर पुत्रका योग्य वीर पिता था।" विस्तारसे विवेचन कीजिये।

## अेकांकी नाटक

( अेक विशद गंभीर विवेचन )

जिस प्रकार अपने भावों और विचारोंको दूसरोंपर प्रकट करनेकी सरल प्रवृत्ति मनुष्यमें देखी जाती है अुसी प्रकार दूसरोंके कार्यों और विचारोंके अनुकरण करनेकी प्रवृत्ति भी अुसमें सहज रूपमें ही पायी जाती है। बालक प्रायः अपने बड़े-बूढ़ोंकी नकल किया करते हैं। नकल करनेकी यही सहज प्रवृत्ति नाटकोंका मूल स्रोत है। नकल परिष्कृत होकर नाटकका रूप धारण करती है और साहित्यके अनुशासनमें आकर 'नाट्यकला' का विकास होता है।

प्राचीन कालमें वीरपूजा और धार्मिक भावनाका सहारा लेकर नाट्यकलाके प्रारम्भिक रूपका निर्माण हुआ था। निश्चित तिथियोंपर गतवीरोंकी जीवन-लीलाओंका अभिनय कर अुनके प्रति अपनी श्रद्धा तो व्यक्त की ही जाती थी, अुत्सवोंको अिस प्रकार अधिक मोहक और मनोरंजक भी बनाया जाता था। देवी-देवताओं और अवतारोंके चरित्रोंका अभिनय कर लोग धार्मिक भावनाको भी सन्तोष दिया करते थे। आगे चलकर नाटकोंमें धार्मिक तत्व ही प्रधान रह गया। सदियोंतक यह क्रम चालू रहा, अिसलिये यह कहना अुचित ही है कि भारतीय नाटकका जन्म और विकास धर्मकी गोदमें हुआ है।

संस्कृतका नाट्य साहित्य बहुत सुन्दर है । महाकवि कालिदासका ‘ शकुंतला ’ नाटक तो जगत-प्रसिद्ध है ही । संसारकी लगभग सभी भाषाओंमें असका अनुवाद हुआ है ।

हिन्दीके नाट्य साहित्यका प्रारम्भ अेक प्रकारसे बाबू हरिश्चन्द्रके समयमें अुन्हींके द्वारा हुआ । संस्कृत नाटक शैलीके आधारपर अुन्होंने कअी नाटक लिखे और कअी संस्कृत नाटकोंका अनुवाद भी किया । यों तो फिर नाटकोंका ताँता लग गया, किन्तु कलाकी दृष्टिसे अुन्हें अुच्च कोटिका नाटक नहीं कहा जा सकता । कविरत्न सत्यनारायणके मालतीमाधव और अुत्तर रामचरित्र अवश्य प्रशंसनीय हैं ।

आधुनिक कालमें बाबू जयशंकर प्रसादने साहित्यके अिस अंगकी पूर्ति अपनी अमूल्य रचनाओं द्वारा की है । अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त आदि अुनके अुच्च कोटिके नाटक हैं । हरिकृष्ण प्रेमी, सेठ गोविन्ददास, लक्ष्मीनारायण मिश्र, अुदयशंकर भट्ट आदि आजके प्रसिद्ध नाटककार हैं ।

**अेकांकी नाटक** की रचना आधुनिक युगकी वस्तु है । भारतके विभिन्न प्रान्तीय भाषाओंके साहित्यमें भी अेकांकी नाटकोंका सूत्रपात हुअे बहुत दिन नहीं बीते हैं ।

पिछली सदीमें भारतीय साहित्यपर पश्चिमी साहित्यका बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है । कविता, कहानी, नाटक, अुपन्यास, समालोचना आदि साहित्यके सभी अंग अुससे प्रभावित हुअे हैं । कहानी ( लघुकथा ) की भाँति ही अेकांकी भी पश्चिमसे ही आया है ।

पश्चिममें भी आजसे पचास वर्ष पहले अेकांकियोंका पता नहीं चलता। अतः यह कहना सत्य ही है कि अेकांकी आधुनिक युगकी वस्तु है।

संस्कृतके–नाट्य शास्त्रके अनुसार रूपक अर्थात् नाटकके कअी अुपभेद अैसे होते हैं जिनमें केवल अेक ही अंक होता है। किन्तु, केवल अिसी आधारपर अुन्हें आजके अर्थमें अेकांकी नाटक नहीं कहा जा सकता। आजका अेकांकी नाटक कलाकी दृष्टिसे साहित्यका अेक विकसित और परिपुष्ट अंग बन गया है, अुसका अपना अेक स्वतंत्र तंत्र है।

आजकलके संघर्षमय व्यस्त जीवनमें लम्बे लम्बे अुपन्यासोंके पढ़नेका समय नहीं रह गया है। अुसी तरह लम्बे नाटकोंको खेलने अथवा पढ़नेके लिअे भी अवकाश नहीं है। फलतः अुपन्यासके स्थान-पर कहानी और नाटकके स्थानपर अेकांकी प्रिय हो रहे हैं। यद्यपि कहानी और अेकांकी नाटकके जन्म और विकासके अन्य भी कारण हैं, फिर भी यह कहना ही होगा कि समयका अभाव भी अेक मुख्य कारण है।

अेकांकी अेक अंकमें समाप्त होनेवाला नाटक है जो ३०, ४० मिनटसे लेकर डेढ़ घंटेके बीचमें खेला जा सकता है। कहानी-की तरह अेकांकीका विस्तार सीमित हुआ करता है। अुपन्यासमें अथवा नाटकमें अनेक पात्रोंके व्यापक जीवनका, अनेक घटनाओंका विस्तृत चित्रण जितना सम्भव होता है, अुतना कहानी अथवा अेकांकी-में नहीं। अेकांकीकी परिधि सीमित होनेके कारण कथा भी अपने संकुचित रूपमें अुपस्थित होती है। अेकांकी नाटकमें पात्रके जीवनका

क्रमबद्ध विवेचन प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। वहाँ तो जीवनका अेक पहलू अथवा अेक महत्वपूर्ण घटना ही चित्रित की जा सकती है। जो अन्तर अुपन्यास और कहानीके बीचमें है वही अन्तर नाटक और अेकांकी नाटकमें है।

अेकांकी नाटकमें अेक ही घटना होती है। नाटकीय कौशलसे अुसमें विशेष कौतूहल अुत्पन्न किया जाता है और अुसे चरम सीमा तक पहुँचाया जाता है। अेकांकी नाटकमें अेक भी अप्रधान प्रसंग नहीं रहता। "अेक अेक वाक्य और अेक अेक शब्द प्राणकी तरह आवश्यक रहते हैं। पात्र चार-पाँच ही होते हैं जिनका सम्बन्ध नाटकी घटनासे सम्पूर्णतया सम्बद्ध रहता है। अेकांकी नाटकमें केवल मनोरंजनके लिये अनावश्यक पात्रोंकी गुंजाअिश नहीं रहती। प्रत्येक व्यक्तिकी रूपरेखा पत्थरपर खिंची हुअी लकीरकी भाँति स्पष्ट और गहरी होती है।"

विस्तारके अभावके कारण प्रत्येक घटनाकी भूमिका पहले नहीं दी जा सकती। अुसे तो थोड़ी ही देरमें, श्री रामकुमार वर्माके शब्दोंमें "कलीसे फूल बनना पड़ता है।" कथावस्तु स्पष्ट और कौतूहलसे युक्त रहती है और अुसमें वर्णनात्मककी अपेक्षा अभिनयात्मक तत्वकी प्रधानता रहती है। अिस प्रकार अेकांकी नाटककी रचना साधारण नाटककी रचनासे कठिन है। अुसमें विस्तारके लिये अवकाश ही नहीं। अतअेव स्वाभाविकताके साथ नाटकीय कथावस्तुका प्रारम्भ, विकास, चरम सीमा और अन्त बिना किसी शिथिलताके हो जाना चाहिये।

अिस प्रकार हम देखते हैं कि कहानी और अेकांकीमें बहुत साम्य है। दोनोंकी परिधि सीमित होती है, दोनोंमें अेक घटना, अेक अनुभव अथवा अेक परिस्थितिको अुपस्थित किया जाता है। सारांश यह कि दोनोंकी अन्तरात्मामें कोअी अन्तर नहीं होता। पर, अितना साम्य होनेपर भी अुनमें भेद होता है। कहानी श्रव्य काव्य है और अेकांकी दृश्य काव्य; अिसलिये अेकांकीकी रचना पूर्ण रूपसे अभिनयका ध्यान रखकर की जाती है। कहानीकार कहानीमें स्वयं अुपस्थित होकर कभी घटनाका, कभी पात्रका, आवश्यकतानुसार परिचय दे सकता है; किन्तु अेकांकीमें अेकांकीकारका कोअी स्थान नहीं होता। अुसे जो कुछ भी प्रकट करना होता है, जो कुछ भी वह कहना चाहता है, अेकांकीके पात्रों द्वारा ही कर सकता है। अिसलिये रचनाकी दृष्टिसे कहानीका लिखना अेकांकीकी अपेक्षा सरल होता है।

कहानीकी अपेक्षा अेकांकीकी घटना और पात्रोंकी रूपरेखा अधिक स्पष्ट होती है। अिनमें प्रायः मनोविश्लेषणकी प्रवृत्ति पायी जाती है। कुछ अेकांकियोंका अुद्देश्य वर्तमान समस्याओं-की ओर संकेत करना भी होता है।

सभी साहित्यिक कृतियोंमें किसी-न-किसी प्रकारका संघर्ष अुपस्थित रहा करता है। नाटकका तो रूप ही संघर्षमय है। यह संघर्ष दो प्रकारका हुआ करता है—आन्तरिक और बाह्य। आन्तरिक संघर्ष हृदयकी अुन चिन्तन-धाराओंपर प्रकाश डालता है जो किसी विशेष परिस्थितिमें पड़े हुअे किसी विशेष

पात्रके हृदयको मथा करती है। बाह्य संघर्षमें शारीरिक शक्ति-प्रदर्शन प्रमुख है। नाटकके रंगमंचपर यह बाह्य संघर्ष अभिनयके रूपमें प्रकट होता है और दर्शकके मनोरंजनका साधन बनता है। किन्तु कलाकी दृष्टिसे बाह्य संघर्षकी अपेक्षा आन्तरिक संघर्षका ही महत्व विशेष हुआ करता है।

सफल अेकांकीमें भी संघर्षकी, विशेषतया आन्तरिक संघर्षकी अुपस्थिति अत्यन्त आवश्यक हुआ करती है। अधिकांश अेकांकीकार अिस तत्वका महत्व समझते हुअे अपनी रचनाओंमें अिसे प्रस्तुत करनेका प्रयत्न करते हैं। अैसा करनेमें अेकांकीकारको अपने पात्रोंके मानसमें प्रवेश करना पड़ता है और नाटकमें मनोविश्लेषणको स्थान देना अुनके लिये आवश्यक हो जाता है।

यद्यपि हिन्दीमें अेकांकी अेक नयी ही चीज़ है, फिर भी अिनका प्रारम्भ हुअे लगभग १०, १२ वर्ष बीत चुके हैं। अिसी अवधिमें बहुत-से अच्छे अेकांकी लिखे भी गये हैं। तंत्रके सम्बन्धमें भी अनेक मत प्रचलित हो चुके हैं। वे मत भविष्यमें रहेंगे। अिसलिये अुन्हें जान लेना अच्छा होगा। कुछ विद्वानोंके मत हम यहाँ अुन्हींके शब्दोंमें (कहीं कहीं सरल रूप देकर भी) रख रहे हैं।

श्री सद्गुरुशरण अवस्थीजीका कथन है कि

"हम कलाकी परम्परावाली मन अुबा देनेवाली परिपाटी कभी अधिक काल तक स्वीकार नहीं कर सकते। बड़े बड़े नाटकोंके लम्बे-लम्बे कथोपकथन (वार्तालाप), दृश्योंकी सजावटकी

अतिशयता, विपर्योंका परिवर्तन तथा वर्णन-बाहुल्य, कथा-विकास तथा चरित्र-विकासकी लपेटमें काव्य-विकासका लम्बा प्रयोग, नाटकमें औत्सुकताकी प्रधानताके लिये अुलझी हुअी कल्पनाओं ये सब बातें युगोंसे सबको परेशान किये है। अेकांकी नाटकमें हम अिनकी छाँह भी देखना पसन्द नहीं करते।

"अेकांकी नाटकका अेक सुनिश्चित और सुकल्पित लक्ष्य होता है। अुसमें केवल अेक ही घटना, परिस्थिति, अथवा समस्या प्रबल होती है। कार्य-कारणकी घटनावली अथवा कोअी गौण परिस्थिति अथवा समस्याके समावेशका अुसमें स्थान नहीं होता। अेकांकी नाटकके वेगयुक्त प्रवाहमें किसी प्रकारके अन्तप्रवाहके लिये अवकाश नहीं होता।"

श्री रामकुमार वर्मा हिन्दीके अेक सफल अेकांकीकार है। अुनके मतका थोड़ा-सा परिचय हम अूपर भी कहीं दे आये हैं। आपका मत है कि

"अेकांकी नाटकमें अेक ही घटना होती है और वह घटना नाटकीय कौशलसे कौतूहलका संचय करती हुअी चरम सीमा ( Climax ) तक पहुँचती है। अुसमें कोअी अप्रधान प्रसंग नहीं रहता।

"संस्कृत नाटकोंमें चरम सीमाके लिये कोअी स्थान नहीं है, यद्यपि कौतूहल और जिज्ञासाकी सबसे बड़ी शक्ति अुसमें निवास करती है। जब 'नायककी विजय' का सिद्धान्त लेकर नाटक चलता

है तब चरम सीमाके लिये स्थान ही कहाँ रह जाता है, जिसमें अेक-अेक भावना नायकको मृत्यु या पराजयके मुखमें ढकेल सकती है।

"अेकांकी नाटक साधारण नाटकोंसे भिन्न हुआ करते हैं। अुसके कथानकका रूप तब हमारे सामने आता है जब आधीसे अधिक घटना बीत चुकी होती है। अिसलिये अुसके प्रारम्भिक वाक्यमें ही कौतूहल और जिज्ञासाकी अपरिमित शक्ति भरी रहती है। बीती हुअी घटनाओंकी व्यंजना चुम्बककी तरह हृदयको आकर्षित करती है। कथानक प्रगतिसे आगे बढ़ता है और अेक-अेक भावना घटनाको घनीभूत करते हुअे कौतूहलके साथ चरम सीमाके रूपमें चमक अुठती है। और नाटककार फिर समस्त वेगसे बादलकी भाँति गर्जन करता हुआ नीचे आता है। चरम सीमाके बाद अेकांकी नाटककी समाप्ति हो जानी चाहिये, नहीं तो समस्त कथानक फीका पड़ जाता है।"

प्रोफेसर अमरनाथने अेकांकीके सम्बन्धमें लिखा है:

(१) अेकांकीकी समाप्ति अेक ही बैठकमें अनिवार्य है। वह अेक ही बार और अेक ही समयमें समाप्त होनेवाली कृति है।
(२) बिजलीकी गति जैसी ही अुसकी तीव्र गति हुआ करती है।
(३) अुसका विषय अेक ही होता है।
(४) सहायक विषयोंके लिये अुसमें कोअी स्थान नहीं।
(५) अेकांकी फौरन प्रारम्भ हो जाता है।
(६) शीघ्र ही चरम सीमा तक अुसे पहुँचना होता है और अन्त भी अुसी प्रकार आकस्मिक होता है।

(७) क्षेत्र संकुचित किन्तु प्रभावपूर्ण होता है।

(८) सहायक घटनाअें, कभी कभी आ सकती है, किन्तु वह मुख्य घटनासे अलग न जान पड़ें। सहायक घटनाअें, चाहे अुनका कितना ही सफल प्रतिपादन हुआ हो, अेकांकीके लिये बाधा स्वरूप ही है।

(९) अेकांकीका विषय जीवनकी अेक घटना ही है।

(१०) कथावस्तु जटिल नहीं होती।

(११) अेकांकी छोटा ही होता है क्योंकि अैक्य अुसका ध्येय होता है। अूपर लिखे गये भिन मतोंसे अेकांकीके सम्बन्धकी रूप-रेखा स्पष्ट हो जाती है।

### कथोपकथन

कथोपकथन अेकांकीका प्राण है। कथोपकथन संक्षिप्त, मर्मस्पर्शी तथा चरित्रकी चरित्नताको प्रकट करनेवाला और अेकांकीके कथानकको आगे बढ़ानेवाला होना चाहिये।

कथोपकथन स्वाभाविक होना चाहिये। जिस श्रेणी अथवा धरातलके व्यक्तिसे जो कुछ कहा जाय वह अुस श्रेणी अथवा धरातलके व्यक्तिके अनुकूल हो।

नाटकमें ही जब 'स्वगत कथन' आजकल बिल्कुल पसन्द नहीं किया जाता, तब अेकांकी नाटकमें अुसका होना क्षम्य कैसे कहा जा सकता है। 'स्वगत कथन' है भी अेक अस्वाभाविक बात।

कथोपकथन अिस प्रकारका नहीं होना चाहिये कि वह वाद-विवाद जैसा प्रतीत हो। अेकांकोंमें वाद-विवाद भी स्थान पा सकता है, किन्तु वहीं, जहाँ वाद-विवाद प्रस्तुत करना ध्येय हो। सामान्य स्थलोंपर कथोपकथन बिलकुल स्वाभाविक और सरल होना चाहिये।

कभी-कभी कथोपकथनोंमें कोअी पात्र अुपदेशकका रूप ग्रहण कर लेता है, अथवा बोलता ही चला जाता है, मानो वह व्याख्यान दे रहा हो। कथोपकथनके लिये यह दोनों ही दुर्गुण हैं। पात्रोंको मितभाषी होना चाहिये।

मितभाषणके साथ ही अुसमें अेक मार्मिकता भी होनी चाहिये। प्रत्येक वाक्य चुस्त हो, रोचक हो तथा अपना अेक निजी मूल्य रखता हो। अेकांकी नाटककी बहुत कुछ सफलता अुसके सुन्दर कथोपकथनपर निर्भर होती है।

## अभिनय सम्बन्धी संकेत

प्राचीन नाटकोंमें अभिनय सम्बन्धी संकेत नहीं पाये जाते हैं। आजकल लिखे जानेवाले नाटकोंमें अुनका अेक महत्वपूर्ण स्थान रहता है। अेकांकी नाटकमें तो अुनकी और अधिक आवश्यकता होती है। बिना अुनके नाटकका रूप प्रतिष्ठित नहीं होता। संकेत, नाटकको दर्शनीय बनाने और अुसके प्रभावको अुद्दीप्त करनेके लिये सहायक होते हैं। अभिनय करनेवालोंको अिन संकेतोंसे बड़ी सहायता मिलती है।

## अेकांकी नाटकोंके भेद

नाटकोंकी भाँति अेकांकी भी विविध प्रकारके हो सकते है, होते हैं। विषयकी दृष्टिसे वे सामाजिक, अैतिहासिक, राजनीतिक, चारित्रिक तथा तथ्यप्रदर्शक हो सकते है।

सामाजिक अेकांकी नाटकोंमे समाज सम्बन्धी अवस्थाओंका, समस्याओंका चित्रण किया जाता है। सामाजिक जीवन व्यापक है और अुसकी समस्याअें विविध हैं। अिसलिये सामाजिक अेकांकी नाटक विविध विषयोंपर हो सकते है।

अैतिहासिक अेकांकियोंमें अितिहासकी कोअी घटना ली जाती है।

सफल अैतिहासिक अेकांकी अुसे ही कहा जा सकता है जो अुस कालका सजीव और सच्चा चित्र अुपस्थित करता है। यह तभी सम्भव हो सकता है जब अेकांकीकारने अितिहासका अच्छा अध्ययन किया हो, तत्कालीन वातावरण, रीति-रिवाज, वेश-भूषा, परिस्थितियो आदिका अच्छा ज्ञान प्राप्त किया हो। अैतिहासिक नाटकोंमें नाटककारको अपनेको बिल्कुल निरपेक्ष रखना पडता है। वहाँ तो पात्रोंको स्वयं स्वाभाविक अभिनय करने के लिये छोड़ दिया जाता है। प्रो. रामकुमार वर्माका 'समुद्रगुप्त' अिसी शर्तापर लिखा गया है।

चारित्रिक नाटक अुसे कहते हैं जिसमें किसी व्यक्ति विशेषकी जीवन झाँकी दिखायी जाती है। अैसे नाटक किसी पात्र विशेषके

चरित्रकी सुन्दरताको प्रकट करनेके लिये लिखे जाते हैं। 'शाही कैदी' अिसी प्रकारका अेकांकी है।

राजनीतिक नाटकोंका विषय राजनीति होता है और तथ्य-प्रदर्शक नाटकोंमें नाटककार कोअी सन्देश नहीं देता, मत नहीं व्यक्त करता, केवल किसी घटनाकी, विषयकी वास्तविक परिस्थितिको व्यक्त करता है।

× × ×

हिन्दीमें अेकांकी नाटकका साहित्य समृद्ध हो रहा है। अनेक कलाकार अिस दिशामें प्रयत्नशील हैं। अैसी आशा की जा सकती है कि साहित्यका यह क्षेत्र अितना अूपर अुठ आयेगा कि अुसपर हिन्दी साहित्य गर्व करेगा।